मेवाड़ प्रजामण्डल आंदोलन में साप्ताहिक नवजीवन का योगदान

डॉ. सुशीला शक्तावत
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास)
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.).342001
E-mail : sushilashaktawat@yahoo.com

राजस्थान के शीर्षस्थ साप्ताहिक पत्रों में नवजीवन की गणना विशेष उल्लेखनीय है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व ही इस पत्र ने एक निश्चित लोकतांत्रिक एवं प्रगतिशील नीति अपनाकर राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान करना एवं समाज में नवजागरण की भावना उत्पन्न करना अपना विशिष्ट ध्येय रखा। इसके लिए उसको अनेक बार संघर्षो से जुझना पड़ा और तत्कालीन शासन व्यवस्था का कोपभाजन भी बनना पड़ा। परन्तु लक्ष्य स्पष्ट था कि समाज को निश्चित पथ पर अग्रसर होने को प्रेरित किया जावें और समाजघाती व्यक्तियों के चंगुल से देश के प्रबुद्ध वर्ग को बचाया जाय व राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की नीतियों का समर्थन किया जाय। यही तो पबद्ध एवं प्रगतिशील पत्रकारिता का आधार एवं ध्येय होता है।

नवजीवन को यह गौरवमय सम्मान दिलाने का श्रेय इनके सुयोग्य संपादक श्री कनक मधुकर के सौम्य व्यक्तिव का है, जिन्होनें प्रत्येक विषम परिस्थितियों का दृढ़ता पूर्वक सामना करते हुए अपने आदर्शो एवं लक्ष्यों को प्राप्त करने का अथक परिश्रम किया और उसका सुपरिणाम है कि उन्हें समाज के सभी वर्गो का स्नेह सहयोग और सम्मान मिला।

नवजीवन और कनक जी के महत्वपूर्ण अवदान को स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में ही देखना चाहिए वे उस जुझारू पीढ़ी के हे जिसमें राजपूताना में सामन्तवाद की जड़ हिला दी थी और अंग्रेजी सम्राज्यवाद से उसकी दोस्ती और दास्ता के सारे षड्यन्त्रों का पर्दाफाश किया था।

कनक मधुकर ने अपने पत्र नवजीवन द्वारा रियासतों में उत्तरदायी सरकार की स्थापना के लिए प्रजामण्डल द्वारा संचालित संग्राम को अपनी लेखनी द्वारा नये आयाम दिये। मेवाड में राजशाही की समाप्ति में उनके पत्र ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

नवजीवन साप्ताहिक का प्रकाशन 16 दिसम्बर 1939 को नवजीवन प्रेस अजमेर से प्रकाशि हुआ प्रथम तीन अंकों के संपादक ठाकुर नारायण सिंह व सह संपादक कनक मधुकर थे। बाद में संपादक कनक मधुकर बने व आदर्श प्रेस से नवजीवन प्रकाशित होता रहा। नवजीवन ने अपने मूल सिद्धान्त के सभी अंको को मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित किया।

प्रजा–प्रजा धिप प्रेम प्राप्त कर, कर दुख दमन निवारन।
भेदभाव छल–छिद्र दुष्टता, दंभ विनाशन कारण।।
प्रकाशित हुआ सकल वसुधा के शुभ सुधार का साधन।
मानव जीवन को नवजीवन दान हेतू। नवजीवन।।

नवजीवन के माध्यम से कनकजी ने राजस्थान में हो रही देशी राज्यों की निरंकुश सरकारों की मनमानी को अपने तथा अपने मित्रों के सहयोग से सम्पादित किया। मेवाड़

प्रजामण्डल की आरे से चल रहे सत्याग्रह आंदोलन के समय मेवाड़ के प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्र नाथद्वारा में गत 30 अक्टूबर 1938 को मेवाड़ पुलिस द्वारा निशस्त्र प्रजाजन पर लाठी चार्ज हुआ उसके चित्र हमें उन दिनों मेवाड़ में चल रहे दमन चक्र के कारण प्राप्त नहीं हो सके थे। अब उन चित्रों के प्राप्त होने पर पाठकों के अवलोकनार्थ हम उन्हें यहाँ उपस्थित कर रहे है। इसका स्पष्ट उदाहरण 27 जनवरी 1940 में प्रकाशित मेवाड़ पुलिस की नृशंस पाशविकता का एक नमूना नाथद्वारा में हुए लाठीचार्ज का मर्मस्पर्शी दृश्य सचित्र प्रकाशित करना था। यह कार्य निश्चय ही साहस पूर्ण कहा जायेगा।

कनकजी को भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 15 अगस्त 1942 को गिरफ्तार किया गया 1 अक्टूबर 1943 को रिहा किया गया। लगभग 14 माह तक अजमेर जेल में नजरबन्द रखा गया। 1 अक्टूबर 1943 से 18 अप्रैल 1945 तक उन्हें निर्वासन काल भोगना पड़ा। लगभग डेढ़ वर्ष के निर्वासन से नवजीवन का पुनः प्रकाशन कठिन हो चला। कनकजी ने साहस कर नवजीवन के साधनों को पुनः जुटाकर अगस्त 1944 में मेवाड़ की राजधानी उदयपुर से इसका प्रकाशन आरम्भ किया।

<u>लाग बागों का जोर :–</u> मेजा में रेवेन्यु का कुप्रबन्ध, पुलिस की रिश्वत खोरी और शिक्षा तथा चिकित्सा की अव्यवस्था तो प्रसिद्ध है ही पर वहाँ की अनेक लाग–बागों की कहानी तो विचित्र ही है। कीरो से और उनके पाड़ों से बेगार तो ली ही जाती है, पर ककड़ियों के दिनों में प्रति घर तीन ककड़िये या एक आना सख्ती से और अलग वसूल किया जाता है। लड़की के चंवरी के 5) और लड़के के विवाह तथा अन्य मौसर आदि में 22 कांसे अथवा तीस सेर वजन मिठाई राज लेता है। चरनौट में से मवेशियों को पकड़कर किले में बंद करना और फिर उनका टैक्स वसूल करना तो मामूली बात है।

इधर पोसी पूनम से पहले ही लगान वसूली शुरू हो जाती है। ज्यूडिशियल का प्रबन्ध ठीक है पर सुना है वहाँ भी रावतजी सा. वेजा प्रभाव डालने के ध्यान में रहते है। रावतजी सा. की सरलता और सादगी पर हम मुग्ध है, पर समयानुसार ठिकाने की उन्नति की ओर भी उनका ध्यान जा सके तो अच्छा है।[2]

<u>कोठारिया :–</u> महत्वपूर्ण घोषणा यह पहले भी लिखा जा चुका है कि श्री कु. दरियाव सिंह जी कोठारी के यहाँ मजिस्ट्रेट नियुक्त होकर आने के बाद ठिकाना प्रगति पर है। यह जानकर और भी संतोष हुआ कि एक घोषणा द्वारा कुछ दिन हुए जनता को संवत 1970 तक की वाकियात के 4439811 रूपय सब के सब माफ कर दिये गये हैं। ठिकाने के स्कूलों मे फीस बिल्कुल बन्द कर दी गई हैं। गरीब विद्यार्थियों को पुस्तकं और स्लेट आदि मुफ्त देने की भी व्यवस्था की गई है। लगान के साथ जो शिक्षा का टेक्स लिया जाता था वह भी हमेशा के लिये माफ कर दिया गया है। देहातों के चार पाठशालायें है। वहाँ सब अध्यापकों के पास औषधियों की एक संदूक रहा करेगा शहर में तो एक अलग औषधालय ही खोल दिया गया है। रावत जी सा तदर्थ बधाई के पात्र है।[3]

साप्ताहिक नवजीवन में जहाँ सुधारों की सराहना की गई वहीं उनके जुल्मों व अत्याचारा के विरूद्ध भी आवाज उठाई गई। इसी अंक में भीण्डर व भेसरोड़गढ़ के रिश्वतखोर कर्मचारियों के बारे में लिखा है। छोटी सादड़ी के करजू में सवर्णो द्वारा रेगरों से मारपीट व लूट के बारे में

चर्चा की गई है साथ ही जिस तरह रेगरों के विरूद्ध निर्णय किया गया उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत चरितार्थ की गई। रेगरों के साथ न्याय किया जाना चाहिए इस सम्बन्धों में लिखता है – इस विषय में हमने संबधित अधिकारी रेवेन्यू मिनिस्टर डॉ महता से पूछताछ की उनकी सह्रदयता पर हम मुग्ध है किन्तु हमें दुःख है, इस विषय में उनका उत्तर नित्य प्रति आ रहे संवादों के साथ कुछ भी मेल नहीं खा रहा है। हम चाहते है इस बारे में वे कुछ उदार मनोवृति से काम ले सकें तो अच्छा है।

छोटी सादड़ी – सवर्णो और पुलिस की ज्यादती– अभी करजू कांड तो भूला ही नही गया कि खेड़ा नामक गांव में मारोला ठिकाने की रेगरों की बरात के सवर्णो और पुलिस की ज्यादती के और दर्दनाक समाचार मिले है। वहां भी दूल्हें के सिर पर लगा हुआ तुर्रा छीना गया और रेगरों को बुरी तरह से पीटा गया और सारी प्रतापुरे की पुलिस चौकी में रोक लगा दी गई तथा 5) छोगा लगान के नाम से जुर्माना वसूल करने के बाद ही बरात को जाने दिया। इसकी रिर्पोट सादड़ी अदालत में की गई। पर मालूम हुआ है वहां के एक नौसिखिया उच्चाधिकारी ने भी किसी जौम में आकर उल्टा रेगरों को ही डाटा। क्या उदारमना प्रधानमंत्री इस और ध्यान देगें।

सलूम्बर विचित्र नजराना – सेठ श्री धूलीराम जी कोठारी द्वारा अपने मकान में पत्थर का नाहर बना कर रखने पर कहते है रावत जी सा सलूम्बर ने 200 नजराना लिए। सुनते है श्री भूपाल सिंह खखड़ के मारफत जी रावत जी के बहुत मुह लगे हुए है ऐसे और रिश्वत के आये दिन किस्से होते रहते है[5]।

मेवाड़ की झ्ठी गर्वोक्तियां प्रतिबन्धों की लटकती तलवार जागीरदारों का बेजा पक्ष क्या प्रतिबन्ध उठेगा सर्वक्षी रामनारायण चौधरी, हरिभाऊ उपाध्याय, विजयसिंह पथिक, हरिभाई किंकर आदि नेताओं पर बिजौलिया आंदोलन से ही कोई 12 वर्ष हुए मेवाड़ प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है। आंदोलन को खत्म हुए एक युग व्यतीत होने आया पर प्रतिबन्ध की यह तलवार अभी तक ज्यों की त्यों लटकी हुई है। धन्य मेवाड।

उदयपुर में तारीख 31 मई को राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्थायी समिति की बैठक होने जा रही है। कहते है कि इसमें सम्मेलन के जीवन मरण को समस्या सामने आ रही है। परन्तु प्रतिबन्ध लगे होने के कारण हरिभाऊ उपाध्याय जैसे प्रभुत्व व्यक्ति उसमें सम्मिलित नहीं हो सकते। इस तरह जब भी मेवाड़ प्रजामण्डल आदि के अनेक महत्वपूर्ण मसले आते रहे हैं, मेवाड़ को इन नेताओं की सेवाओं से सदैव वंचित रहना पड़ता आ रहा है। क्या प्रगतिशीलता का दम भरने वाली राघवाचार्य जी की सरकार अब भी समय रहते यह प्रतिबन्ध उठाकर दूरदर्शिता का परिचय देगी। साथ में श्री तेजावत जी पर जयपुर की म्युनिसिपल हद से बाहर न जाने का प्रतिबन्ध लगा हुआ है, क्या वह भी मेवाड़ के लिए शोभा की बात है[6]।

जहाजपुर जिला राजनैतिक सम्मेलन – जहाजपुर जिले का प्रथम राजनैतिक सम्मेलन मेवाड़ प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री माणिक्यलाल वर्मा के सभापतित्व में गत ता. 19 व 20 को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम स्वागतध्यक्ष श्री मथुराप्रसाद जी वैद्य ने जिले के किसानों की दुर्दशा पर प्रकाश डाल कर उनकी आवश्यक सहायता पर जोर दिया। उसके बाद सम्मेलन के

सभापति श्री वर्मा जी ने किसानों की दर्दनाक हालत तथा बेकारी व गरीबी का मार्मिक चित्र उपस्थित किया। फिर वर्तमान संकट के समय किसानों तथा अन्य नागरिकों से एक होने की अपील करते हुए उत्तरदायी शासन की विवेचना के साथ–साथ लोगों से प्रजामण्डल के संगठन में शामिल होने के जोरदार आहवान के साथ अपना भाषण समाप्त किया। बाहर से आने वालों में अजमेर के मोहम्मद अब्दुल शकूर सा. भीलवाड़ा के रमेशचन्द्र व्यास तथा शाहपुरा के सर्वश्री अभयसिंह डांगी, लादूराम व्यास तथा लक्ष्मी दत काटिया का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बाहर से आये सज्जनों ने अलग विषयों पर भाषण दिये, जिसमें मो. शकूर सा. का भाषण काफी ओजस्वी था।[7]

जागीरदारों के जुल्म – ठिकाना सेमलिया (जिला कीलबाग) के जागीरदार ने हाल ही में सेटलमेन्ट के सिलसिले में दो निरपराध आदमियों के नाक कान काट लिये थे। सरकार ने इस कंलकपूर्ण काण्ड की जांच भी शुरू कर दी थी पर कहते है, जाँच पड़ताल करने वाले गिरदावर जाँच में ढील देकर जागीरदार का बेजा पक्ष ले रहे हैं। कहा जाता है कि गिरदावर को रवानगी में ऐसा ही करने को कहा गया है। यदि यह सच है तो मेवाड़ के लिए यह बड़े शर्म की बात होगी और जुल्मी जागीरदारों को उल्टा शै देना होगा।[8]

मेवाड़ के किसानों में असंतोष – जंगलात कानून का विरोध मेवाड़ प्रजामण्डल के सद प्रयत्न से महाराणा साहब ने जंगलात के ठेके का कानून वापस ले लिया।[9]

म्यूनिसिपल चुनाव आंदोलन का श्री मेहता जी द्वारा उद्घाटन

सार्वजनिक सभा में उम्मीदवारों का शपथग्रहण प्रजामण्डल में विश्वास मेवाड़ प्रजामण्डल के टिकिट पर खड़े होने वाले उम्मीदवारों के नाम निम्न है ।[10]

वार्ड नं. 1

1- वकील अक्षयसिंह जी देपुरा 2. डॉ. ऊंकारलाल जी 3. गोविन्दलाल जी अवदीच

वार्ड नं. 2

1. भूरेलाल जी बया 2. भगवती प्रसाद जी 3. कृष्णा कुमारी जी शर्मा
4. अक्षय सिंह जी वकील

वार्ड नं. 3

1. हीरालाल जी कोठारी 2. तेजसिंह जी मेहता 3. रोशनलाल जी बोर्दिया

वार्ड नं. 4

1. डॉ. रामशरण जी शर्मा

वार्ड नं. 5

1. आनन्द स्वरूप जी डूंगरपुरिया 2. गणेशलाल जी छाप्या 3. रणजीत लाल जी चोरड़िया

वार्ड नं. 6

1. वकील भगवतीलाल जी चोरड़िया

वार्ड नं. 7

1. वेद्यनाथ भवानी शंकर जी
वार्ड नं. 8
1. मोहनलाल सुखाड़िया 2. डॉ. बख्तावरलाल जी 3. नाथूलाल जी अग्रवाल
वार्ड नं. 9
1. वैद्य अमृता लाल जी 2. मथुरानाथ जी पंचोली 3. वैद्य जमना लाल जी
वार्ड नं. 10
1. भंवरलाल जी तापलिया 2. वैद्य राव भवानीशंकरजी 3. डालचंद जी
4. वैद्यरात अमृतलाल जी
वार्ड नं. 11
1. वैरिस्टर मथुरा नाथ जी पंचोली

रियासती कार्यकर्ता संघ की विशेष बैठक उदयपुर में ता. 30 को कार्यकारिणी के सब सदस्य आमंत्रित ता. 30 को उदयपुर में रियायती कार्यकर्ता संघ की कार्यकारिणी की विशेष बैठक होने जा रही है। इस अवसर पर सर्व श्री गोकल भाई भट्ट, हीरालाल जी शास्त्री जयनारायण जी व्यास, युगलकिशोर जी चतुर्वेदी, मास्टर भोलानाथ जी, श्री कांटिया जी आदि रियासती नेताओं के शुभागमन की आशा है।[11]

रियासती कार्यकर्ता संघ की बैठक ता. 30 नवम्बर व 1 दिसम्बर को हुई इसमें जयनारायण व्यास, हीरालाल जी शास्त्री, गोकुल भाई यह रघुवर दयाल जी, मास्टर भोलानाथ जी, भोगीलाल जी पडया जी, शाहपुरा से तेजलाल जी असावा श्री कांटिया, बासवाड़ा से इल्जी भाई, ईडर से श्री रामजी शुक्ल आदि प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सार्वजनिक सभा में रियासती नेताओं के ओजस्वी भाषण ता. 30 शाम को मेवाड़ प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री भूरेलाल जी वया के सभापतितव में पंचायती नोहरे में म्यूनिसिपल चुनाव आंदोलन के सिलसिले में एक विशाल सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें सर्वप्रथम मोहनलाल सुखाड़िया ने यहां की म्युनिसिपलटी की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। फिर रियासतों कायकर्त्ता संघ की बैठक के अवसर पर आये हुए सुप्रसिद्ध लोक नेता सर्वश्री जयनारायण व्यास, हरिभाऊ उपाध्याय, गोकुल भाई भट्ट, मास्टर भोलानाथ जी के ओजस्वी व मार्मिक भाषण हुए, जिसमें सबसे म्युनि चुनाव में प्रजामण्डल के टिकिट पर खड़े होने वाले उम्मीदवारों को मत देने की अपील की।[12]

श्री गोकल भाई भट्ट ने अपने भाषण में जनता को कदम–कदम बढ़ाये जा नामक आ.हि. फौज के अभियान गीत के साथ प्रवाह में बहा दिया था। अंत में सभापति श्री बयाजी के सारगर्भित भाषण के बाद सभा समाप्त हुई। श्री बयाजी ने बड़े जोरों से इस प्रदर्शन की निन्दा की जो राज्य द्वारा विद्यार्थियों के शान्त जुलूस के मुकाबले में प्रदर्शित किया गया था।

रियासती लोकनेताओं का नवजीवन कार्यालय में प्रीतिभोज के लिये आमंत्रित किया गया, जिसमें उदयपुर के प्रमुख कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। सभी ने पत्र की प्रगति पर संतोष प्रकट किया।

म्यूनिसीपलटी चुनाव की तारीखें आगे बढ़ा दी गई है चुनाव दिसंबर के बजाय फरवरो में होगा।[14]

भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के अधिवेशन की हलचल वीर जवाहर हवाई जहज से आ रहे हैं– मेवाड़ी जनता में अपार उत्साह

ता. 31 दिसंबर को पं. जवाहरलाल नेहरू उदयपुर आ रहे है। उदयपुर की जनता का यह सौभाग्य है कि उसे देश के वीर लाड़ले का स्वागत करन का अवसर मिल रहा है।

पण्डित जी का जुलूस हाथीपोल बाहर चौगान के कोने से शुरू होगा और मोती चोहट्टे होता हुआ घंटाघर के पास से मण्डी की नाल व मण्डी होता हुआ सूरजपोल की तरफ घूमेगा और वहां से फतहमेमोरियल के पास समाप्त हो जायेगा।
जो सज्जन नेहरूजी के स्वागत के लिये दरवाजा बनाना चाहते हों या और कोई खास तरह का स्वागत करना चाहते हों वे स्वागत समिति के मंत्री से मिलें। आशा है, उदयपुर वासी वीर नेहरू का उचित स्वागत करेंगे।[15]

राजनैतिक प्रदर्शिनी – अ. भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के उदयपुर अधिवेशन पर एक राजनैतिक प्रदर्शिनी का भी निश्चय किया गया है जिसके द्वारा देशी राज्यों के विस्तार शासन विधि, दमन उद्योग आदि सब प्रकार की जानकारी देने का प्रयत्न किया जायेगा।[16]
सोमवार 28.01.1946 ईस्वी मेवाड़ में सर्वत्र स्वतंत्रता दिवस प्रभात फेरी, झंझाभिवादन, जूलुस और विराट सभा का अपूर्व आहवान स्वाधीनता दिवस के 2–3 दशक बीत जाने पर इस वर्ष मेवाड़ में स्वाधीनता दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। सवेरे 5 बजे कमलिया बाड़ी से प्रभात फरी निकाली गई जो शहर की विभिन्न सड़कों ओर गलियों से होकर प्रजामण्डल के नये कापलिय मोती चौदह में जाकर समाप्त हुई। सुबह झण्डा अभिवादन किया गया। शाम को आजाद चौक में विशाल सभा हुई जिसमें स्वाधीनता दिवस की प्रतिज्ञा शान्तिपूर्वक की गई और उस पर सभापति भूरेलालजी बया विवेचनात्मक भाषण हुआ। इसके बाद कांग्रेस के महामंत्री की आज्ञानुसार इस दिवस की कारवाई यहीं समाप्त हो गई। अनाज की बिगड़ती हुई समस्या पर श्री बयाजी ने प्रजामण्डल की ओर से किये जाने वाले प्रयत्नों (डेपटेशन और मेमोरेण्डम) का उल्लेख करते हुए बताया कि हम ऐसी निकम्मी सरकार को बदल कर रहेंगे जो अपनी कमजोरी के कारण साधारण मसले हल करने का भी सामर्थ्य नहीं रखती है। यदि सरकार अनाज की समस्या नहीं सुलझा सके तो उसे प्रजामण्डल को इसका सम्पूर्ण अधिकार दे देना चाहिए। जनता में काफी जोश था। आपने हिसाब दफ्तर के क्लर्कों क`चल रहे मामलों के बारे में बताया कि मालूम हुआ है कि इस सिलसिले में की गई अपील नामन्जूर होकर सब कागजात दाखिल दफ्तर कर दिए गये है। इससे सिथिति सुधरने की नहीं है। प्रधानमंत्री द्वारा जनता की आवाज की यह उपेक्षा असहनीय है। हम इस समस्या का हल करके रहेंगे।

रियासती जनता का प्रश्न– मेवाड़ प्रजामण्डल के अध्यक्ष का पण्डित नेहरु के नाम महत्वपूर्ण पत्र– मेवाड़ प्रजा मण्डल के अध्यक्ष माणिक्यलाल वर्मा ने ब्रिटिश मंत्री मिशन के सम्बन्ध में अ.भा.दे.श. लोकपरिषद के अध्यक्ष प. जवाहरलाल नेहरु को एक पत्र लिखा है, जिसमें आपने बतलाया है कि देशी रियासतों की तरफ से केन्द्रीय सरकार की विज्ञप्ति के अनुसार राजे महाराजे तथा रियासतों के दीवान ही मिलेंगे। इसे जानकर बड़ी निराशा हुई, क्योंकि हम जानते है ि कवे दस करोड़ रियासती जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करते। आज देशी रियासतों में राजतन्त्र का भवन ढह रहा है और प्रजातन्त्र का युग सामने है। हम देशी रियासतों के कार्यकर्त्ता वस्तुस्थिति के प्रति उदासीन नहीं रह सकते। उपेक्षा असहनीय और अपमानजनक है। अन्त में आपने नेहरु जी से इस विषय में मार्गदर्शन चाहा है।

खबर है कि ब्रिटिश मंत्री मिशन के सामने रियासती जनता का प्रतिनिधित्व प. जवाहरलाल नेहरु कर रहे है।[18]

डुंगरपुर राज्य प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन– कार्यकत्ताओं की चित्रमय झांकी का भव्य जलूस, विराट सभा तथा अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव का भी विवरण नवजीवन में दिया गया।[19]

मेवाड़ अहलकार संघ गैर कानूनी घोषित। मेवाड़ में गिरफ्तारियां : शहर में 144 धारा – जलूस पर लाठी चार्ज– पुलिस का आतंक [20]

मेवाड़ अहलकार संघ गैर कानूनी घोषित किया व प्रमुख नेता ,प.उमाशंकर जी, गजेन्द्र राय जी, पूर्णशंकर, श्रीकृष्ण जिज्ञासु को अचानक गिरफ्तार कर लिया गया। मोहनलाल सुखाड़िया के सभापतित्व में एक विराठ सभा का आयोजन हुआ जिसमें तय हुआ कि सरकार की कारवाई के विरोध हड़ताल बोल दी जाये। सभा में सर्व श्री निरन्जननाथ आचार्य, रमेशचन्द्र जी वकील और नूरमोहम्मद जी आदि के भाषण हुए। उसके बाद सारी सभा जूलुस के रूप में परिणित हो गई। दिल्ली दरवाजे के पास जुलूस को निखरने के लिए पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया और रिवाल्वर की धमकी भी दी गई। खबर है कि घुड़सवारों का दल भी प्रयोग में लाया गया। लाठी से मनोहर सिंह जी महता, चांदनमल जी डागलिया आदि के चोट भी पहुँची बताते है। इसी बीच बिहारीलाल जी, सुराणा, मोहनसिंह जी डांगी, बख्तावरलाल जी चपलौत, बसन्त कुमार जी खजान्ची आदि पन्द्रह व्यक्ति और गिरफ्तार कर लिये गये है, सारे शहर में पुलिस का आतंक है और 144 धारा लगा दी गई है। डाक भी सेसंर की जा रही हैं। इस बाबत पेम्पलेट और लिफाफे छापने की मनाई की गई है। मेवाड़ अहलकारी संघ गैर कानूनी घोषित कर दिया गया है। अहलकारों में काफी जाश है। स्टेट के सब महकमों में यहाँ प्रायः हड़ताल है। और भी अनेक गिरफ्तारियों की संभावना है। पिकेटिंग शुरू है।

सरकार का दृष्टिकोण – एक प्रेस प्रतिनिधि के भेंट करने पर मिनिस्टर इन वेंटिग और कौंसिल सेकेट्री ने बताया कि अहलकारों की मांगों पर सरकार विचार कर रही थी पर धमकी भरे हड़ताल के नोटिस को कोई भी सरकार गवारा नहीं कर सकती। इसके अलावा ता. 10 को मीटिंग और जुलूस प्रदर्शन भी वांछनीय नहीं कहे जा सकते। लाठी चार्ज के सिलसिले में पुलिस की रिपोर्ट में न होना जाहिर आया है।

मेवाड़ अहलकार संघ को पं. नेहरू का समर्थन –[21]

ता. 18 को अहलकारों की मांगों के प्रति सहानुभूमि प्रकट करने तथा उनकी मांग को बल देने के लिए सारे शहर में हड़ताल रखी गई केवल बोहरों की कुछ दुकानें खुली थी। ता. 20 को संघ क उपमंत्री श्री श्याम सुन्दर जी संचेती आदि की गिरफ्तारी के समय का उत्साह देखते ही बनता था। 144 धारा इस दिन जनता ने खुले आम तोड़ी। अपने नेताओं की गिरफ्तारी पर अहलकारों ने अहलकार संघ जिन्दाबाद व हमारी मांगे पूरी हो के नारे लगाये। ता. 21 को संघ के उपाध्यक्ष श्री ख्याली लाल जी तलेसरा ने जिनका इतने दिनों तक पुलिस कुछ पता नहीं लगा सकी थी, प्रकट होकर कोलपोल से सांझी के मंदिर तक एक बड़े जुलूस के रूप में 144 धारा को खुले आम भंग किया। जब उनको गिरफ्तार कर पुलिस की मोटर आगे बढ़ने लगी तो जनता का जोश और भी उमड़ पड़ा और मोटर को नेताजी के आदेश मिलने तक आगे न बढ़ने दिया। उसके बाद अहलकारों ने गिरफ्तारी के विरोध में एक बड़ा जुलूस और निकाला। इस तरह से सरकार द्वारा लगाई गई 144 धारा खुले आम भंग की गई। पर फिर कोई गिरफ्तारी नहीं हुई। पुलिस की दौड़ धूप जारी है।

मालूम हुआ है ता. 10 को मेवाड़ प्रजामण्डल के नाम पं. जवाहरलाल नेहरू का एक पत्र आया है, जिसमें उन्होने अहलकारों की मांगों का समर्थन किया है। इस पत्र को लेकर उसी दिन

मेवाड़ प्रजामण्डल का एक डेपुटेशन प्रधानमंत्री से भेंट कर चुका है। सुनते है सरकार के रूख हिल रहे है और संभव है कि शीघ्र ही समझौत का कोई हल भी निकल आये। मेवाड़ शिक्षक संघ, मजदूर युनियन, नगर प्रजामण्डल और बार एसोसिएशन आदि ने भी अहलकारों की मांगों का समर्थन किया है।

मेवाड़ अहलकार संघ की विजय सब बिना शर्त रिहा :– मांगो हेतू कमीशन नियुक्त। पं. नेहरू जी के निर्देशन अनुसार मेवाड़ प्रजामण्डल की और से सरकार के साथ चल रह रहे समझौते के फलस्वरूप मेवाड़ अहलकार संघ के आंदोलन के सिलसिले में गिरफ्तार शुदा 51 अहलकार ता. 24 बुधवार को 3.30 बजे बिना शर्त रिहा कर दिये गय। कहते है आई.जी.पी. मोटर लेकर जेल पर पहुँचे और सब बन्दी अहलकारों को अलग अलग तीन टुकड़ियों में बंट जाने का संकेत दिया। जिन दमन के हाथों से उन्होनें एक दिन रिवाल्वर ताना उन्हीं हाथों से उन्हें रिहाई का हुक्म दिखाना पड़ा। इस पर पुलिस और अहलकारों में काफी विनोद भरी चर्चा रही बताते है। जेल में सब अहलकार मोटरों द्वारा अपने अपने महकमों में पहुंचाये जाकर रिहा कर दिये गये । इस दिन कचहरिये समय से अधिक देर तक खुली रही। ताकि अहलकार अपनी उपस्थिति लिखा सके। रिहा अहलकारों का सब महकमों में स्वागत किया गया और वे समारोह के साथ अपने अपने घर पहुँचाये गये। रिहाई के पर्व अन्त समय तक गिरफ्तारिया जारी रही। ता. 23 को भंवरलाल जी टाइपिस्ट होम डिपार्टमेन्ट मालदास स्ट्रीट से जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तारी के समय पुलिस के देखते –देखते गायब हो गये। ठीक उसी समय जगदीश चोक में श्री भगवान लाल जी पुलिस लारी पर चढ़ गये और भाषण देते हुए गिरफ्तार हुए। ता. 24 को सुबह श्री कर्ण सिंह कोठारी चंदन सिंह बोर्दिया, केसुलाल जी आदि कोई नौ गिरफ्तारिया और हुई।

जागीरदार ने राष्ट्रीय झण्डा फहराया[23] । राष्ट्रीय विद्यामंदिर के द्वारा आयोजित नागरिकों की एक सभा में केलवा जागीरदार श्री दोलतसिंह जी ने स्वयं अपने हाथों राष्ट्रीय झण्डा फहराया और जय हिन्द द्वारा सबका स्वागत किया। नागरिकों द्वारा अन्नदाता की उपाधि से अभिनन्दन करने पर जागीरदार सा. ने कहा कि अन्नदाता नही जय हिन्द कहो और युग के साथ चलो। मेवाड़ में वह पहला अवसर है कि एक जागीरदार ने राष्ट्रीय झण्ड व नारे का सार्वजनिक रूप से स्वागत व प्रयोग किया है।

मेवाड़ प्रजामण्डल की कार्यकारिणीकी विशेष बैठक – शासन सुधार कमेटी की कार्यवाही आदि पर विचार[24]

मेवाड़ प्रजामण्डल की केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक गत ता 22 और 23 को उदयपुर आफिस में हुई जिसमें कई महत्वपूर्ण विषयों पर विचार किया गया और खास तौर से शासन सुधार कमेटी में होने वाली कार्यवाही पर गौर करने के बाद वह इस नतीजे पर पहुंची कि शिक्षा, चिकित्सा, कृषि सुविधा, जंगलात, उद्योग सप्लाई, पी.डब्ल्यू.डी., जेल आदि सब हितकारी महकमें अविलम्ब असेम्बली द्वारा चुने हुए मिनिस्टरों के हाथ में सौंपे जाये, असेम्बली एक ही होनी चाहिये और वह भी अधिकार हक तथा विधान की भूमिका में शासन सुधार उत्तरदायी शासन का लक्ष्य मान कर और बढ़ने के लिए निश्चित कदम के तौर पर ही किए जाये। यह मानने की हालत में ही प्रजामण्डल के सदस्य उस कमटी में रह सकेंगे वरना उन्हें कमेटी छोड़कर चले आने के लिये कहा जायेगा।

गिरवा जिले में सुअर समस्या के कारण सैंकड़ों गांवों व हजारों किसान परिवारों के तबाही और बरबादी का सामना करना पड़ रहा है, जिसके कारण मेवाड़ के कई हिस्सों के किसानों में काफी बैचनी फैली हुई है तथा आंदोलन जैसी स्थिति पैदा हो रही है। अतः एक प्रस्ताव के द्वारा सरकार को किसानों की वाजिब मांग मान लेने हेतु आग्रह किया गया, ताकि संकटपूर्ण स्थिति पैदा न हो सकें। इसके अलावा कुछ महत्वपूर्ण मसलो पर विचार करने हेतु ता. 7,8 सित. को जनरल कमेटी की बैठक भीलवाड़ा में होना तय हुआ।

सुअरों की समस्या बाबत् मेवाड़ प्रजा मण्डल के अध्यक्ष श्री बयाजी ने भी एक महत्वपूर्ण व्यक्तव्य द्वारा सरकार का ध्यान इस और आकर्षित किया है।

प्रजामण्डल के झण्डे के पीछे–त्याग व बलिदानों का अमर इतिहास– मालुम हुआ है, राज्य ने प्रजामण्डल के द्वारा मुन्शी विधान का विरोध किये जाने पर विधान में परिवर्तन करना मंजुर कर लिया है। जिसमें चुनाव अप्रत्यक्ष के बजाय प्रत्यक्ष मान लिया गया हैं। देहातों के आम चुनाव के लिये जहाँ पहले 90000 पर एक का अनुपात रक्खा गया था, वहाँ अब 60000 पर रखा गया हैं। इससे करीब 10 सीट बढ़ जायेगी। आम चुनाव में कोई बंदिश नहीं रखी गई है इससे कोई भी व्यक्ति कहीं से भी खड़ा हो सकेगा। संशोधन धारा में दो तिहाई न होकर केवल बहुमत के सिद्धहस्त को मान लेने पर भी जोर दिया जा रहा है।

सुना है श्री के.एम. मुंशी भी तारीख 14 को यहां आ रहे है। आशा है कि वे पहले की भांति प्रतिक्रियावादी ताकतों के हाथों में अब न खेलेंगे और नये प्रधानमंत्री से भी आशा है कि वे किसी के अभाव में न आकर जनमत का आदर करेंगे।

तारीख 9 को खेराड़ी में लगभग डेढ़ हजार किसानों के बीच भूरेलाल वया, मोहनलाल सुखाड़िया, बलवन्त सिंह जी आदि के सामयिक व ओजस्वी भाषण हुए। सबने महसूस किया कि प्रजामण्डल के झण्डे के पीछे त्याग का लम्बा इतिहास है।

मेवाड़ प्रजामण्डल की जनरल कमेटी की बैठक तारीख 31 अक्टूबर व नवम्बर को उदयपुर में हो रही है जिसमें मेवाड़ के विधान में संशोधन तथा वार्षिक अधिवेशन की तारीखों के बारे में विचार किया जायेगा। इसके पूर्व तारीख 29 व 30 को कार्यकारिणी की बैठक होगी।

रियासतों में अराजकता–गांधीजी द्वारा नरेशों की चेतावनी।[26] गांधीजी ने रियासतों में हो रही गड़बड़ी व अराजकता का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यद्यपि बहुत सी रियासतें हिन्द संघ में शामिल हो गई है तथापि वे अपने आपको हिन्द संघ से बन्धा हुआ नहीं समझती। बहुत से नरेश समझते हैं कि अब उन्हें अपनी रय्यत के साथ मनमानी करने के लिये अंग्रेजी शासन काल की अपेक्षा अधिक आजादी है। किंतु मैं नरेशों को चेतावनी देना चाहता हूँ कि उसके लिए अपनी अस्तित्व रक्षा का एक सही उपाय यही है कि वे अपनी प्रजा के साथ ट्रस्टी बन जाये। ये निरंकुश स्वेच्छाचारी शासक बनकर जीवित नहीं रह सकते।

मेवाड़ प्रजामण्डल महासमिति की कार्यकारिणी तथा ता. 31, 1, 2 को महासमिति का अधिवेशन उदयपुर में श्री भूरेलाल जी बया के सभापतित्व में विशाल समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। मेवाड़ के जिले से काफी सदस्यों ने अधिवेशन में सोत्साहभाग लिया। अनेक प्रस्ताव हुए जिसका विवरण आगामी अंक में।[27]

मेवाड़ प्रजामण्डल की महासमिति का अधिवेशन स्थानीय पुराने सिनेमाघर के प्रांगण में निर्मित मध्य पांडाल में गत सप्ताह समारोहपूर्वक संपन्न हो गया।

अधिवेशन के अध्यक्ष श्री बयाजी ने अपने प्रारंभिक भाषण में भारत की वर्तमान रानैतिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए मेवाड़ के सामन्ती जुल्मों के बारे में आपन बताया कि आज इन जागीरी जुल्मों के आगे रूसकेजार के अत्याचारों की कहानियां भी फीकी पड़ रही है। विधान में किये गये संशोधनों के बारे में आपने बताया कि जनता के विधान बनाने का हक इन नये सुधारों में भी पूरा नहीं होता। महाराणा सा. को काफी अधिकार दिये गये है सो अवांछनीय है। फिर पहला प्रस्ताव प्रो. प्रेमनारायण माथुर ने रक्खा, जिसमें भारत की स्वतंत्रता पर हर्ष व विभाजन पर दुःख प्रकट किया गया।[28]

धारासभा के चुनाव–प्रजामण्डल की पहली जीत–मेवाड़ धारा सभा के शहरी नामजन्दगी के पर्चे तारीख 8 को दाखिल हो गये थे, जिसमें नाथद्वारा और भीलवाड़ा में प्रजामण्डल के उम्मेदवार निर्विरोध चुने गये। अतः तारीख 20 को देहातों में नामजगदी के पर्चे भरे जा रहे हैं। आशा है प्रजामण्डल योग्य उम्मीदवारों को खड़ा करने का पूरा–पूरा ध्यान रखेगा।

प्रजामण्डल का ध्येय पूर्ण लोकतंत्र कायम करना है– प्रजामण्डल द्वारा धारा सभा का चुनाव घोषणा पत्र प्रकाशित घोषणा में व्यापक दृष्टिकोण–30

मेवाड़ राज्य प्रजामण्डल ने धारा सभा के चुनावों में भाग लेने का निर्णय किया हैं तत्संबंधी घोषणा पत्र प्रकाशित हो गया है। घोषणा पत्र में कहा गया है कि हमारा ध्येय मेवाड़ में पूर्ण उत्तरदायी शासन कायम करना हैं और जब तक इस प्रकार की शासन व्यवस्था कायम नहीं हो जाती, तब तक उसके लिये बराबर संघर्ष करना और वह धारा सभा में इसी उद्धेश्य की पूर्ति के लिए जाना चाहती हैं।

घोषणा पत्र में कहा गया है कि जिम्मेदाराना हुकुमत का अर्थ है कि जनता द्वारा निर्वाचित धारा सभा का सर्वोपरि राजनैतिक उद्धेश्य हो और मंत्रिमण्डल के प्रति उत्तरदायी होगा। मेवाड़ के प्रत्येक नागरिक को विधान द्वारा मौलिक अधिकार प्राप्त हो प्रांतीय प्रजातंत्र के विधान में लागू किये जायेंगे। महाराणा के स्थान पर एक वैधानिक प्रमुख हो। उत्तरदायी शासन की व्यवस्था का आधार स्थानीय शासन हो।

औद्योगिक विकास : घोषणा पत्र में कहा गया प्रजामण्डल मेवाड़ की प्रचुर प्राकृतिक सम्पति का उपयोग औद्योगिक विकास पड़त जमीन को उपजाऊ बनाना, सिंचाई के साधन का विस्तार करके मजदूरों व आमजनता के स्तर को ऊंचा उठायेगा। किसानों को ठिकाने के कर्जे से मुक्त करना, पूंजी का इंतजाम करना और पशुओं की नस्ल में सुधार करेगा। प्राकृतिक सम्पदा पर व्यक्तिगत स्वामित्व के स्थान पर राज्य का अधिकार माना जायेगा और बड़े पैमाने पर सामुहिक खेती को भी उचित प्रोत्साहन दिया जायेगा।

<u>सामाजिक व्यवस्था</u> : समस्त जातियों को अपने क्षेत्र की भाषा के बारे में पूरी जानकारी। इस बात का ध्यान रखा जायेगा कि धर्म की आड़ में समाज की प्रगति को रोकने वाली प्रथाये, परम्परायें, रीतियां और रिवाज तथा संस्थाओं को बर्दाश्त न किया जाये। स्त्री को पुरूष के बराबर का ही दर्जा और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को उसके बराबर की ही सुविधायें प्राप्त होगी।

<u>समस्त जनता के लिए :</u>

1. मेवाड़ भर में प्रारम्भिक शिक्षा व प्रौढ़ शिक्षा की एक निश्चित योजना के अनुसार व्यवस्था करना ताकि मेवाड़ की जनता जल्दी से जल्दी से शिक्षित हो सके।

2. रियासत भर में दवाखानों और औषधियों की संख्या में तेजी के साथ वृद्धि करना ताकि मेवाड़ की आम जनता को चिकित्सा की समुचित व्यवस्था हो सके।
3. राज्य भर में बेगार और बलेठ का अंत करना।
4. एक निश्चित योजना के अनुसार राज्य भर में मद्यपान निषेध के कार्यक्रम को अमल में लाना।
5. भारत राष्ट्र की रक्षा में मेवाड़ अपना शानदार हिस्सा ले सके इस दृष्टि से मेवाड़ की जनता को तैयार करना और उसके लिए आवश्यक सैनिक शिक्षा और संगठन की व्यवस्था करना।

किसानों के लिए :

1. मौजूदा जागीरदारी प्रथा का अंत करना और संबंधित जागीरदारी के लिए ऐसी व्यवस्था करना कि वे समाज के एक स्वस्थ और उपयोगी अंग है के रूप में मेवाड़ के नव निर्माण में योग दे सकें।
2. राज्य के जिन–जिन हिस्सों में अभी तक बंदोबस्त नहीं हुआ है उनमें राज्य के खर्च से बंदोबस्त कराना और लगान तथा जमीन संबंधी ऐसा कानून पास करना कि किसान से क्षमतानुसार उचित लगान लिया जाय।
3. किसान को लकड़ी और घास की जो आज तकलीफ है उसे मिटाना ताकि उसे आवश्यकतानुसार लकड़ी और घास मिल सके। प्रत्येक गांव की आबादी और आवश्यकता के अनुसार चरागाह के लिए आवश्यक भूमि छाड़ने की व्यवस्था करना।
4. सहकारिता कानून पास करा कर राज्य भर में सहकारिता का प्रचार और प्रसार करना और किसान को आर्थिक उन्नति के लिए उसका पुरा उपयोग करना।

मजदूरो के लिए :

1. वर्तमान मजदूरों संबंधी कानून में आवश्यक परिवर्तन करना और नये कानून बनाना ताकि मजदूरों के काम करने के घण्टे और उनका न्यूनतम वेतन आधुनिक न्यायोचित आधार पर तय किया जा सके, मजदूरों का सवेतन अवकाश और मजदूर स्त्रियों को सवेतन प्रसूती अवकाश मिल सके।
2. मजदूर वर्ग के रहने के लिए स्वस्थ और सुविधाजनक मकानों की तमाम संभव उपायो द्वारा पूर्ण व्यवस्था करना।
3. मजदूर वर्ग के लिए बच्चों की शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा का प्रबन्ध करना।
4. मजदूर संगठन के लिए आधुनिक मापदण्ड से मान्य आधार पर पुरी–पुरी सुविधा देना।

उद्योग, व्यापार तथा मध्यम श्रेणी और नौकर पेशा वर्ग के लिए :

1. मेवाड़ के औद्योगिक विकास की दृष्टि से घरेलु और छोटे पैमाने के उद्योग धंधों को प्रोत्साहन देना।
2. उद्योग धंधों के क्षेत्र में राज्य द्वारा अनुचित ढंग की एकाधिकार देने की जो नीति आज प्रचलित है और जो मेवाड़ के समुचित आर्थिक विकास में आज बाधक हो रही है उसमें आवश्यक परिवर्तन।
3. मोटर द्वारा आवामगन क्षेत्र में ठेके की जो नीति आज प्रचलित है उसे बन्द करना।
4. मेवाड़ में सब प्रकार के यातायात के साधनों जैसे रेल, तार, डाक आदि का विकास करना ताकि व्यापार व्यवसाय की उन्नति हो सके।

5. व्यापार–व्यवसाय तथा दूसरे क्षेत्रों में मेवाड़ के निवासियों को समुचित अवसर और आवश्यक प्रोत्साहन देना।

राजपुताना एक प्रांत बने श्री पथिक, व्यासजी व वर्मा जी का एक अ.भा.दे.रा. लोक परिषद की राजपूताना प्रादेशिक कौसिल के अध्यक्ष श्री जयनारायण व्यास ने एक समाचार समिति के प्रतिनिधि को बताया है कि राजपूताना की समस्त रियासतों को मिलाकर राजस्थान का नाम देना चाहिये और राजपूताना की किसी भी रियासत को चाहे वह बड़ी हो चाहे छोटी पृथक ईकाई नही बनने देना चाहिये।[31] एक प्रेस प्रतिनिधि के भेंट करने पर मेवाड़ के लोकनायक श्री वर्माजी ने बताया कि मेवाड़ के महाराणा ने राजस्थान यूनियन से अलग होकर बड़ी भूल की है। मेवाड़ की जनता इसे भी बर्दाश्त नही कर सकती। राजस्थान एक प्रांत बन कर रहेगा।

विजय सिह पथिक अध्यक्ष संयुक्त राजस्थान संघ ने दिल्ली में एक वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिसमें उन्होंने राजस्थान के बंटवारों की प्रस्तुत योजना को अव्यवहारिक तथा शरारतपूर्ण बतलाया है। मेवाड़ के लोकनेताओं की हत्या के एक षडयंत्र का भण्डाभोड़ श्री द्वारकादास माली ने तारीख 27 को किया हुआ है जिसमें मोहनलाल सुखाड़िया को जहर देने की योजना थी। इस बाबत् 28 तारीख को प्रो. कुलश्रेष्ठ के मकान की तलाशी हुई है।[32]

कोटा में संयक्त राजस्थान संघ का निर्माण– संघ में राजपूताने की नौ रियासते सम्मिलित आदि समाचार नवजीवन में छाये रहें।[33]

सड़ी गली सरकार को खत्म करो। उदयपुर में चुनाव की सरगर्मी : गुंडागीरी शुरू

गत सप्ताह चुनाव की तिथि नजदीक आती गई राजधानी में चुनाव की सरगर्मी काफी जोरों से देखने में आई। 'सी' मंडल से प्रजामण्डल के उम्मेदवार श्री मास्टर बलवन्त सिंह तथा मुस्ताफ अहमद निर्विरोध चुने जा चुके है। अब चुनाव ए और बी मंडल में है। ए मण्डल में प्रजामण्डल के उम्मेदवार प्र.म. के अध्यक्ष भूरेलाल बया और बी मण्डल से प्रो. प्रेमनारायण माथुर थे। प्रजामण्डल की तरफ से जो धुआधार प्रचार हुआ इससे प्रतिक्रियावादियों के दिल हिल उठे।

शाम को आजाद चौक से जुलूस रवाना हुआ। दो मोटर ट्रको पर अनेको राष्ट्रीय पताका ये काफी शान से फहरा रही थी।

वोट किसमे हल वाली सफेद पेटी में का नारा तो और भो अधिक गुंजायमान हो रहा था।

जुलूस की समाप्ति मोहता पार्क में हुई जहां फिर श्री सुखाड़िया जी के सभापतित्व में विराट सभा हुई। उपस्थित पन्द्रह हजार की जनता ने बतला दिया कि जनता पूरे दिल से प्रजामण्डल के साथ है।

दूसरे दिन सुबह से पोलिंग स्टेशनों पर खुब हलचल शुरू हो गई। प्रेस प्रतिनिधि को धमकाया और महिलाओं से छेड़छाड़ पुलिस की बदइन्तजामी का पूरा सबूत था। सबसे अधिक सरगर्मी सादड़ी की हवेली पर थी।

तिरंगे झंडे का अपमान– शाम को इतनी नौबत पहुंची कि वहीं पास में पब्लिक इमारत पर फहराते हुए तिरंगे झण्डे को जागीरदार समाज के गुण्डों ने हटाकर बावड़ी में डाल दिया। प्र.म. के लोकप्रिय मंत्रियों को भी गुण्डों ने घेर लिया और लोकनेता श्री नरेन्द्र पाल जी और रमेश जी व्यास के साथ तो मारपीट कर बैठे। वकील श्री आनन्द स्वरूप जी डुंगरपुरिया और पांच–चार बच्चों को भी काफी चोटे आई। ताज्जुब तो यह है कि यह सब पुलिस की आंखों के नीचे हो रहा था। इस से जनता में काफी रोष फेल गया। तुरन्त श्री बया महाराणा के पास पहुंचे। आई.जी.पी. व डी.आई.जी. त्रिवेदी तथा सब इंसपेक्टर हरिशंकर जी दशोरा को जनता जोरों से कोस

रही थी। थोड़ी देर बाद झण्डा बावड़ी से निकाला गया, जिसे फिर डिवीजन कलेक्टर ने पूर्व यथा स्थान पर फहराया।[35] फिर गुण्डागीरी तथा झण्डे के अपमान के विरोध में चुनाव का तुरन्त बायकाट कर दिया गया और सारा समूह एक जुलूस के रूप में शहर की उमड़ चला। आज का नारा ''इस सडी गली सरकार को एक ठोकर मार दो'' मुख्य था। आज का जुलूस उदयपुर के इतिहास में अद्‌भुत था। ट्रक में सब से आगे प्रजामण्डल के दोनो उम्मीदवार बया जी और प्रो. माथुर बेठे थे। जुलूस के आगे पीछे पुलिस के घुड़सवार थे और हजारों की जनता थी।

आज भी जुलूस मोहता पार्क पहुंचकर सभा के रूप में परिणित हो गया। जहां श्री बयाजी के सभापतित्व में वहां तुरन्त कार्यवाही शुरू हो गई। कोई बीस हजार जनता ने एक स्वर से शहर में पूर्ण हड़ताल करने का निश्चय किया। वक्ताओं ने तुरन्त दीवान और आई.जी.पी. को हटाने तथा पूर्ण लोकप्रिय सरकार की मांग की।

तारीख 5 को सुबह सारे शहर मे हड़ताल हो गई। राज्य की ओर से भी दो सप्ताह के लिए शहर में 144 धारा का एलान कर दिया। प्रजामण्डल की कार्यकारिणी मिली और एलान किया गया कि दोनों लोकप्रिय मंत्रीयो ने गैर जिम्मेदाराना सरकार से इस्तीफा दे दिया है और आगे शीघ्र पूर्ण उत्तरदायी शासन मिले बिना चैन न लेगी।

जनता का जोश देखकर सरकार ने 144 धारा उसी वक्त उठा ली। फिर प्रजामण्डल ने भी जुलूस का प्रोग्राम रद्द कर दिया।[36]

सरकार बुद्धि का समतोल खो बैठी : भारी गोलीकांड[37] घायल व्यक्तियों की रिपार्ट के बाद का समाचार है कि गोलीकांड से आहत दो शहीदों के अस्पताल मे जो आठ घायल भर्ती है इनमें पांच गोली के शिकार है और तीन लाठी व पत्थरों से घायल है, उनमे प्रेमशंकर के तीन टांके लगे है, सोहनलाल कोठारी तथा लक्ष्मीलाल जी चित्तौड़ा के होदे लगाये गये है जिससे वे 6–7 घण्टे तक बेहोश रहे। सुना है, आज उनकी हालत ठीक है।

इसके अलावा गोली से आहत लोगों में रोशनजी के ऑपरेशन में तीन गोली कालुलाल नलवाया के एक गोली और बड़बाई के नंद कुमार जी के दो गोली निकली है। इनमें श्री नन्दू जी के पैर पर बहुत भारी जख्म है। श्री परशरामजी को धीरे–धीरे राहत मिल रही है और गुलाब सिंह जी शक्तावत जी का ता. 9 को पैर काटना पड़ा है।

शहीदों के सीने में गोलिया ध्यान रहे शहीदों में शांतिलाल को 6 गोली और आनन्दी के एक भंयकर गोली लगी जिसने शरीर के आर पार कर दाहिने हाथ के भी भरवारा कर दिया। वे तो अमर हो गये पर हत्यारों के सिर सदा कालिख रहेगी। ता. 6 को 10 बजे दोनों अमर शहीदों का विराट जुलूस निकाला गया। आनन्दी के शव का जुलूस अस्पताल से हाथीपोल होता हुआ दिल्ली दरवाजे आये शांतिलाल के जुलूस के साथ शामिल हुआ। शवयात्रा का लोम हर्ष दृश्य देखे न बनता था। हजारों की संख्या में जनता ने अमर शहीदों को श्रंदाजलि दी।

मेवाड़ के इतिहास में जैसा कि प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री बयाजी ने ता. 7 के भाषण में कहा कि उनकी स्मृति जयमल, गोरा बादल व वार आंदोलन के अमर शहीद रूपाजी, करपाजी की वीर जोड़ी के भांति चिरस्मरणीय रहेगी। आप दोनों मामा–भुआ के भाई भी थे।

श्री बयाजी ने वीरों को श्रंदाजलि देते हुए बताया कि इन शहीदों ने राजस्थान में लोकतंत्र की स्थापना की जड़ को अपने खून से सींचा है और उनकी चिता नही जल रही है बल्कि सामन्तशाही जल रही है। आपने बताया कि चेत्र शुक्ला 8 शनिवार ता. 17 अप्रेल को मेवाड़ में शहीद दिवस मनाया जाये और इस दिन सर्वत्र मेवाड़ की नदियों में उनकी भस्म प्रवाहित की

जाय। प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री बयाजी ने संक्षेप में सरकारी विज्ञप्तियों का अन्यत्र जोरदार उत्तर दिया है। लोकनेता श्री वर्माजी, बयाजी व प्रो. माथुर सरदार पटेल के निमंत्रण पर दिल्ली गये है। इधर मेवाड़ सरकार के प्रतिनिधि भी दिल्ली में अपनी पुंछे फटकार रहे है। सुना है महाराणा को इस घटना से काफी रंज है। हत्याकांड के जिम्मेवार आई.जी.पी. व मजिस्ट्रेट को हटाने की बात भी चल रही बताते है।

सरकार की साजिशों में हम शरीक नहीं रह सकते :– लोकप्रिय मंत्री श्री सुखाड़ियाजी व कोठारी जी का त्याग पत्र महत्वपूर्ण वक्तव्य झण्डे का अपमान सरकारी नीति का पर्दाफाशः कौंसिल के भीतर अंतरग कौंसिल जागीरी जुल्म व साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन कभी बर्दाश्त नहीं।[38]

प्रजामण्डल की तरफ से लोकप्रिय मंत्री मोहनलाल सुखाड़िया और हीरालाल कोठारी ने इस्तीफे देने के पश्चात् अपना वकत्व प्रकाशनार्थ दिया है। महिने पहिले मेवाड ने यह निश्चय किया के मंत्रिमण्डल के दो मिनिस्टर सरकार में काम करे। उन्हं शुरू में ही ये विभाग दिये गये जिसमें सबसे ज्यादा दिक्कत लिए हुए थे लेकिन इन विभागों में हमने अपनी योग्यता व पूरी मेहनत करके चलाने व जनता की सेवा करने का प्रयन्त किया। जहां तक हमारे महकमों का सवाल था बहुत ज्यादा नहीं था। लेकिन हम समझते थे कि सारा काम मेलजोल से किया जायेगा। दूसरे विभागों के काम को बेहतर बनाने का अवसर जब कभी भी आया हमने कोशिश की।

हमने यह बराबर अनुभव किया कि काउन्सिल में एक अंतरंग कौंसिल जैसी स्थिति जो महत्वपूर्ण प्रश्नों पर निर्णय लेती है यहां तक कि संबंधित विभागों के महत्वपूर्ण निर्णय हमसे बिना पूछे बिना हमारी जानकारी के कर लिये जाते है। उदयपुर में राजस्थान संघ के बारे में कई बार चर्चाए की गई इन चर्चाओं में हम लोगों को कभी विश्वास में नही लिया गया, बल्कि पिछली बार तो यहा तक स्थिति थी कि हमने श्री महाराणा साहब और प्राईम मिनिस्टर से यह निश्चित तौर पर कहा है कि हमने राजस्थान संघ में शरीक होना ही चाहिए, लेकिन वे अपनी इच्छा पर चलते रहे। दूसरी तरफ चुनाव के सवाल को लेकर मेवाड़ भर में साम्प्रदायिक संस्थाये मारधाड़ का खुला प्रचार कर रहा था और इस पर सरकारी रवैया कुछ न करके अप्रत्यक्ष रूप से उनको पूरा बल पहुंचाता रहा। ठि. बड़ालियास, संग्रामगढ, कोठारिया, भगवानपुरा, कटार, भोमट वगैरा में निरन्तर राष्ट्रीय ध्वज के अपमानित करने व कई जगह कार्यकर्ताओं की पिटाई के समाचार पहुंचने पर भी एक पर भी कारवाई नही की गई। हम लगातार इस बात पर जोर देते रहे कि अगर हालात काबू में नही किये गये तो मेवाड़ के चुनाव के मौके पर निश्चित तौर से खून खराबा होगा। लेकिन उस पर हमेशा कहा गया कि ऐसी स्थिति पैदा नही होगी।

हमने स्वयं पुलिस के उच्चाधिकारी को बताया कि स्वामी माधवानन्दजी की हलचल भारतीय संघ के खिलाफ है और जोधपुर, डूंगरपुर व मेवाड़ के बीच रहस्यपूर्ण कारवाई हो रही है और जहां पुलिस पता नही लगा पाई, वहां हमने गैर सरकारी तौर पर कुछ बाते मालूम की थी वे भी बतलाई। लेकिन उन पर भी ध्यान नही दिया गया।

चुनाव के बारे में महाराणा साहब क्षेत्रिय परिषद के साथ है। इस प्रकार का प्रचार रोकने के लिए कहा गया, लेकिन गजट में विज्ञप्ति प्रकाशित करने के अलावा जिन ने अपने नामो से इस प्रकार पर्चे बांटे उन पर कोई कार्यवाही नहीं को गई। इस प्रकार बराबर ऐसा मालूम होता

रहा कि चुनाव में कोई न कोई बड़ा हाथ प्रजामण्डल के खिलाफ काम कर रहा है। फिर भी जनता के बल के भरोसे और हमारे साथियों के आत्मविश्वास पर हम सब सहन करते रहे।

ता. 2 को मेवाड़ में अन्तर्कालीन सरकार बनने की बात ता.23 मार्च को तय हुई और उसी दिन सुनने में आया कि मेवाड़ राजस्थान यूनियन में शरीक होने को तैयार हो गया है। हमें जहां इस समाचार से हर्ष हुआ वहां हमें यह आश्चर्य भी हुआ कि जब हमने खूब कोशिश की तब तो श्रीमान् महाराणा सा. राजस्थान संघ के लिए तैयार नहीं हुए और अब यह सलाह एक साथ कैसे हो गई? हमें राजस्थान संघ को खुशी थी, लेकिन हम यह समझने में असमर्थ थे कि राजस्थान संघ के कारण अन्तर्कालीन सरकार क्यों न बने? जब इंदौर में पूरी अन्तर्कालीन सरकार संघ में शरीक होने के निश्चय के बाद बन सकती है तो यहां आखिर क्या मंशा थी।

जो हमारा इस बारे में खयाल है वह समय आने पर साफ हो जायेगा। आज हमें इसमे ज्यादा गहरा उतरने की आवशयकता नहीं। प्रजामण्डल ने इस स्थिति का भी मुकाबला धैर्य से किया और चुनाव में हम लगे रहे, लेकिन ता. 3 अप्रेल को उदयपुर के नागरिको ने देखा कि मेवाड़ की राजधानी में प्रजामण्डल में काम करने वाली बहिने जब प्रचार करने जा रही थी उन्हें अश्लील गालियां दी गई, धूल फेंकी गई और प्रजामण्डल के पदाधिकारियों से लेकर स्वयंसेवको को भी भला बुरा कहा गया।

ता.4 को यह स्थिति और भी बिगड़ी, सादड़ी के पोलिस स्टेशन पर राष्ट्रीय ध्वज पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में छीना गया व कुएं में डाल दिया गया। प्रजामण्डल के सहन करने की पराकाष्ठा थी कि हम यह देखे कि जिस ध्वज हेतु हमने कुर्बानियां की हो उसका अपमान पुलिस की मौजूदगी में हो। उस झण्डे को बचाने के लिए जो भी सहयोगी गये उनके साथ मारपीठ की गई और इस प्रकार वातावरण बहुत ही हिंसात्मक बना दिया गया। कहा जाता है कि यह स्थिति पोलिंग स्टेशन बड़ी सादडी की हवेली पर केशरिया झंडा लगाने से पैदा हुई।

बाद की सरकारी विज्ञप्ति में बतलाया गया कि बड़ी सादड़ी की हवेली तक प्राईवेट स्थान था वगैरा माना कि प्राईवेट स्थान था लेकिन क्या यह ठीक नही है कि जहां चुनाव होता है उस पोलिंग स्टेशन पर किसी पार्टी का झंडा नहीं हो सकता और उस समय वह सरकारी इमारत की तरह समझी जाती है। दूसरा क्या यह सही नहीं है कि 11 बजे सुबह तक वहां झण्डा नहीं लगा था।

पं. नेहरू दुबारा उदयपुर में राजस्थान यूनियन का उद्घाटन समारोह यूनियन के नरेशों व लोकनेताओं का आगमन राजधानी में हलचल नेहरूजी अस्पताल भी जायेंगे।[39]

ता. 18 को भारत के प्रधान मंत्री पं. नेहरू द्वारा राजस्थान यूनियन का 11 बजे राजधानी म दरबार हाल में उद्घाटन होने जा रहा है। जहां महाराणा महाराज प्रमुख की हैसियत से पं. नेहरू के सामने शपथ ग्रहण करेंगे। यूनियन के संभावित प्रधानमंत्री श्री उसी समय शपथ लेंगे। इस समय यूनियन में सम्मिलित होने वाली दसों रियासतों के महाराजा, प्रधानमंत्री, लाकनेता, प्रेस प्रतिनिधि व प्रमुख नगर निवासी उपस्थित रहेंगे।

स्मरण रहे यह मान लिया गया है कि महाराणा यूनियन के यवत् आजीवन राज प्रमुख बने रहेंगे और राजधानी उदयपुर ही होगी। पं. नेहरू का कार्यक्रम पं. नेहरू यहा ता. 18 को सुबह हवाई जहाज से 9 बजे पहुंच रहे है। एरोड्रम पर महाराणा साहब, प्रधानमंत्री जी आदि आपका स्वागत करेंगे।

यूनियन का संभावित मंत्रिमण्डल का भी नाम सहित उल्लेख किया गया।

राजस्थान में स्वर्णिम घड़ी का उदय : संघ का निर्माण ता. 18 अप्रैल को प्रधानमंत्री जी जवाहरलाल जी नेहरू सुबह पधारे हवाई अड्डे पर सर्वप्रथम मेवाड़ के प्रधानमंत्री ने स्वागत किया। फिर महाराणा ने आपका खड़े होकर अभिनन्दन किया। एक अलग हवाई जहाज से अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष पदाधिकारी ......भी यहां पहुचं चुके थे। संयुक्त राजस्थान निर्माण के समय महाराणा के राजप्रमुख कोटा महारावल ने उपराज प्रमुख और बूंदी व डूंगरपुर ने कनिष्ट उप प्रमुख की प्रधानमंत्री पं. नेहरू के सामने शपथ ग्रहण की। उस समय राजाओं के चेहरे देखते ही बन आते थे। सुना गया कि महाराणा सा. के बजाय उनके प्रतिनिधि की ओर से शपथ लेन की बात हुई तो पं. नेहरू ने फौरन कहा कि यह रस्म तो आपको ही अदा करनी होगी और हर्ष है कि फिर भारत के एक वफादार नरेश के रूप में श्री महाराणा ने तुरन्त स्वयं शपथ ग्रहण की। सचमुच राजस्थान में आज एक स्वर्णिम घड़ी का उदय हो रहा था। फिर जब लोक नायक श्री वर्माजी यूनियन के प्रधानमंत्री के रूप में प्रधानमंत्री की शपथ लेने सामने आये हो सारा हॉल हर्षसूचक करतल ध्वनि से गूंज उठा। श्री वर्माजी द्वारा कर्त्तव्यनिष्ठा की एक और शपथ भी ली गई। आपने जनता का सहयोग व पंडित जी का आर्शीवाद चाहते हुए कामना प्रकट की कि आप समस्त राजपूताना को राजस्थान प्रांत बनाने में हमारी पूरी मदद करेंगे।

फिर महाराणा का राज प्रमुख के रूप में सामयिक भाषण पढा गया। जिसमें आपने एक महान यज्ञ का अनुष्ठान करते हुए अपने को भारत के महान हित के समर्पण कर दिया। पं. नेहरू ने इस शुभ कार्य के लिये सब नरेशों को बधाई दी व आशा प्रकट की कि वे सब अपनी प्रतिज्ञा को निभायेंगे।

संयुक्त राजस्थान संघ के मंत्रिमण्डल का निर्माण : संयुक्त राजस्थान संघ के प्रधानमंत्री जी श्री वर्माजी ने अपने मंत्रिमण्डल की ता. 24 को घोषणा कर दी है, जिनमें सर्व श्री भूरेलाल बया, प्रेमनारायण माथुर, भोगीलाल पण्डया, गोकललाल असवा, ब्रज सुन्दर शर्मा व दलेल सिंह सहित कुल नो मंत्री लिये गये है। सूनते है पहले एक मंत्री बांसवाड़ा से श्री भूपेन्द्रलालजी त्रिवेदी के लिए जाने की भी चर्चा थी। पर एक राजपूत मंत्री के लेने से उनका नाम रह गया बताते है। प्रधानमंत्री श्री वर्माजी ने इसे गलत बताया कि दलेल सिंह को हमने अपने विश्वास का मानकर लिया है। वे हम पर लादे नही गये है पर ऐसा लगा कि वे यह कहते हुए सहम जरूर रहे थे।

महान राजस्थान भारत की शक्ति का प्रतीक होगा नवजीवन के महान राजस्थान की कल्पना को साकार रूप देने के लिये महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संदेश प्रकाशित किये जिसमें सभी ने राजस्थान को महान बनाने के लिये वृहद राजस्थान प्रांत का निर्माण अनिवार्य बताया।[42]

राजस्थान संघ के सर्वत्र जागीर और खालसे में सब लाग बाग और ब्रेगार प्रथा खतम की जा रही है। इस बाबत् एक अध्यादेश लाया गया है जो सूना है संघ परिषद से तय होकर राजप्रमुख के पास स्वीकृति के लिये भेजा गया है। जिसने किसानों को जागीरदारों के जुल्मों से एकदम मुक्त कर दिया है। जागीरों में लाग–बाग और बेगार के कष्टों की कहानी काफी करूणाजनक रही है, जागीरी प्रथा अब चेन की सांस ले सकेगी।[43]

राजस्थान संघ ने जागीरदारो से पुलिस, न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी सब अधिकार छीनने का निश्चय कर लिया हैं। इससे जागीरदारों के एक तरह पंख काट डाले गये है। जागीरी प्रथा का भी समय पाकर अंत निश्चित है।

गत ता. 23 शाम को श्री राजप्रमुख द्वारा राजस्थान हाईकोर्ट का उद्घाटन किया गया। सर्वप्रथम न्याय मंत्री ब्रज सुन्दरजी ने बताया कि आज का दिन राजस्थान में महत्व रखता है। राजस्थान हाईकोर्ट पक्षपात रहित न्याय और जनता को मूलभूत अधिकारों की रक्षा करेगा और सर्वत्र न्याय का सर्वोच्च आदर्श देश करेगा।[44]

राजस्थान संघ मं मिलने वाले रियासतों के राजाओं को 30 लाख रूपये जेब खर्च के देना तय किया गया।[45]

<u>प्रजामण्डल आदोलन :—</u> में तो सभी दिशाओं में प्रयास किए गए लेकिन सबसे कठोर साधना तत्कालीन पत्रकारों ने की उनकी साधना अनूठी थी। राजनेताओं को आंदोलन में जो भी सफलता मिली उसमें भारतीय पत्रकारिता में अभिव्यक्ति का इतिहास का सत्य सदैव अक्षत रहेगा क्योंकि वह जीवन का सच्चा दस्तावज थी।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि नवजीवन से हमें तत्कालीन वातावरण में मेवाड़ प्रजामण्डल द्वारा किय गये उसके सद्प्रयत्नों की जानकारी मिलती है। मानवीय एवं राजनीतिक अधिकारों हेतु संघर्ष करने वाली मेवाड़ प्रजामण्डल से जनता अत्यधिक प्रभावित हुइ, और उसके साथ जनता का विश्वास सदैव बना रहा। नवजीवन ने रियासती शासकों के शोषण, अत्याचार और निरकुंशता के खिलाफ आवाज बुलन्द की। नवजीवन ने देशी रियासतों के जनजागरण में अपूर्व योग दिया। नवजीवन ने राजाओं और जागीरदारों के खिलाफ जन आंदोलन का समर्थन किया।

संदर्भित सूची :—

1. नवजीवन शनिवार, ता. 27 जनवरी, 1940, पृ. 11
2. नवजीवन, 25.04.42, पृ. 2
3. नवजीवन, 25.04.42, पृ. 2
4. नवजीवन, 25.04.42, पृ. 2
5. नवजीवन, 23.05.42, पृ. 2
6. नवजीवन, 01.06.42, पृ. 2
7. नवजीवन, 01.06.42, पृ. 2
8. नवजीवन, 01.06.42, पृ. 2
9. नवजीवन, 08.08.42, पृ. 2
10. नवजीवन, सोमवार, 26.11.45, पृ. 1
11. नवजीवन, सोमवार, 26.11.45, पृ. 1
12. नवजीवन, सोमवार, 03.12.45, पृ. 1
13. नवजीवन, सोमवार, 03.12.45, पृ. 1
14. नवजीवन, सोमवार, 03.12.45, पृ. 1
15. नवजीवन, सोमवार, 17.12.45, पृ. 1
16. नवजीवन, सोमवार, 17.12.45, पृ. 1
17. नवजीवन, सोमवार, 28.01.46, पृ. 1
18. नवजीवन, सोमवार, 01.04.46, पृ. 1
19. नवजीवन, सोमवार, 08.04.46, पृ. 1

20. *नवजीवन, सोमवार, 15.04.46, पृ. 1*
21. *नवजीवन, सोमवार, 22.04.46, पृ. 1*
22. *नवजीवन, मंगलवार, 30.04.46, पृ. 1*
23. *नवजीवन, मंगलवार, 21.05.46, पृ. 1*
24. *नवजीवन, सोमवार, 26.08.46 वर्ष 6, अंक 44, पृ. 1*
25. *नवजीवन, सोमवार, 13.10.47 वर्ष 8, अंक 3, पृ. 1*
26. *नवजीवन, सोमवार, 27.10.47 वर्ष 8, अंक 05, पृ. 1*
27. *नवजीवन, सोमवार, 03.11.47 वर्ष 8, अंक 06, पृ. 1*
28. *नवजीवन, सोमवार, 10.11.47 वर्ष 8, अंक 07, पृ. 1*
29. *नवजीवन, सोमवार, 16.02.48, पृ. 1*
30. *नवजीवन, 23.02.48, पृ. 1*
31. *नवजीवन, सोमवार, 01.03.48 वर्ष 8, अंक 23, पृ. 1*
32. *नवजीवन, सोमवार, 01.03.48 वर्ष 8, अंक 23, पृ. 1*
33. *नवजीवन, सोमवार, 29.03.48, पृ. 1*
34. *नवजीवन, मंगलवार, 06.04.48, पृ. 1*
35. *नवजीवन, मंगलवार, 06.04.48, पृ. 1*
36. *नवजीवन, मंगलवार, 06.04.48, पृ. 1*
37. *नवजीवन, शनिवार, 16.04.48, पृ. 1*
38. *नवजीवन, मंगलवार, 13.04.48, वर्ष 8, भाग 28, पृ. 1*
39. *नवजीवन, शनिवार, 17.04.48, वर्ष 8, भाग 29, पृ. 1*
40. *नवजीवन, मंगलवार, 20.04.48, वर्ष 8, अंक 30, पृ. 1*
41. *नवजीवन, मंगलवार, 27.04.48, वर्ष 8, अंक 31, पृ. 1*
42. *नवजीवन, मंगलवार, 15.06.48, वर्ष 8, अंक 38, पृ. 1*
43. *नवजीवन, मंगलवार, 22.06.48, वर्ष 8, अंक 39, पृ. 1*
44. *नवजीवन, मंगलवार, 29.06.48, वर्ष 8, अंक 40, पृ. 1*
45. *नवजीवन, मंगलवार, 13.07.48, पृ. 1*